जायसी का आलोचना पक्ष → इस तरह जायसी ने हिन्दुओं के घर में प्रचलित प्रेम कहानियों को आधार बनाकर लौकिक प्रेम के वर्णन के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम साकार किया है। इसके लिए जायसी ने कल्पना के साथ-साथ ऐतिहासिकता को भी आधार बनाया है। पद्मावत के पूर्वार्द्ध में कल्पना तत्व की प्रधानता है और उसके उत्तरार्द्ध में ऐतिहासिकता का स्वर मुखर हुआ है। कल्पना के साथ-साथ इतिहास का यह संयोग अत्यंत विरल है। कल्पना तत्व को निम्नलिखित हेतु से काव्य में महत्वपूर्ण माना है—

1. कथानक में गति आयोजन के लिए
2. नायक के व्यक्तित्व का उत्कर्ष प्रदर्शित करने के लिए
3. रस संचार के लिए
4. रूपक निर्वाह के लिए।

जायसी की पद्मावत गाथा और आख्या दोनों ही रूपों में एक महाकाव्य की गरिमा को प्राप्त करती है। महाकाव्य के लिए जितने तत्वों की आवश्यकता है वे सभी पद्मावत में सहज उपलब्ध हैं। यदि पद्मावत पर महाकाव्यत्व पर विश्लेषण करें तो निम्नलिखित तथ्य उभरकर दिखाई पड़ेंगे।

1. यद्यपि पद्मावत में कल्पना तत्व का भी समावेश हुआ है। लेकिन ऐतिहासिकता कहीं भी नष्ट नहीं हुई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली की भूमिका में इसकी ऐतिहासिकता प्रतिपादित की है और प्रत्येक सर्गों का
2. पद्मावत में 57 सर्ग हैं और प्रत्येक सर्गों का नामकरण वर्णित कथा के आधार पर हुआ है।
3. पद्मावत का नायक रत्नसेन एक धीरोदात्त नायक है और एक उच्चकोटीय कुलीन व्यक्ति है। यही हुआ पद्मावती के साथ भी हुई इतनी।
4. पद्मावत में प्रायः सभी रसों का समावेश

हुआ है। परन्तु श्रृंगार रस की प्रमुखता है।
5. पदमावत में प्रायः नखशिख, मारों, राजि, भोजन, संग्राम, समुद्र आदि के, षट्ऋतु, ... आदि का सांगोपांग वर्णन हुआ है।
6. पदमावत एक उद्देश्य प्रधान रचना है और ईश्वर की प्राप्ति ही इसका लक्ष्य है।
7. भारतीय महाकाव्य के सिद्धांतों के अनुसार प्रत्येक सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन की व्यवस्था होनी चाहिए। जो कि पदमावत में दिखाई नहीं पड़ती लेकिन महाकाव्य का एक अनिवार्य तत्व नहीं है जहाँ तक वर्णन शैली उत्कृष्टता का सम्बन्ध है। पदमावत को एक श्रेष्ठ काव्यकृति कहा ही जायेगा।
पदमावत में जायसी की भावुकता के दर्शन अनेक मार्मिक स्थलों पर होते हैं। भाव पक्ष के उपांगों में प्रमुख हैं रागतत्व, बुद्धि तत्व और कल्पना तत्व इन तीनों ही दृष्टियों से पदमावत एक श्रेष्ठ काव्यकृति कही जा सकती है। जहाँ तक विभिन्न रसों के समायोजन का प्रश्न है हम देखते हैं कि पदमावत में श्रृंगार रस को छोड़कर प्रायः सभी रसों का समावेश उपांग रूप ... वर्णन के प्रसंग में वीर रस की अच्छी व्यंजना हुई है। करुण, रौद्र, वीभत्स रस के भी चित्र कथा प्रसंगों में दिखाई पड़ते हैं। शांत, हास्य और वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति भी यत्र तत्र हुई है लेकिन इन सारे रसों में सर्वत्र श्रृंगार रस की प्रमुखता दिखाई पड़ती है।
जायसी की वस्तु-योजना भी बड़ी व्यापक है। स्थानों और ... की अपनी सूची प्रस्तुत करते-करते नीरस हो गये हैं। लेकिन वस्तु योजना के प्रसंगों में कवि की प्रबंधात्मकता अत्यंत आकर्षक है।
जायसी निर्गुण काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के सर्व प्रमुख कवि हैं।

उन्होंने लौकिक प्रेम कथा का आश्रय लेकर आध्यात्मिक तत्व की अभिव्यंजना की है। वे एक ऐसे रहस्यवादी कवि हैं जिन्होंने सिद्धों और नाथपंथी योगियों की तरह अंतस्साधना पर बल दिया और बाह्याडम्बरों से दूर रहे। उन्होंने अपनी पद्मावत के अंत में आध्यात्मिक रूपक को इस प्रकार प्रकट किया है।

तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल बुधि पदमिनी चीन्हा॥
गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धंधा।
बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।
राघव दूत सोई सैतानू।
माया अलाउदीन सुलतानू॥

उपर्युक्त चौपाई का सारांश यह है कि सिंहल द्वीप की पद्मिनी हृदय में रहने वाली बुद्धि है। परमात्म तत्व जिसकी प्राप्ति के लिए रत्नसेन प्रयत्नशील होता है। नागमती इस दुनिया का गोरख धंधा है। इस गोरख धंधे में पड़ने वाला व्यक्ति उसी में फँसा कर रह जाता है। इस मुक्ति के लिए उसे इस गोरख धंधे से निकल कर हृदय में रहने वाली इस बुद्धि को प्राप्त करना होगा। हीरामन तोता गुरु है जो साधक को लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग दिखाता है। सुलतान अलाउद्दीन माया है। पूरी कथा में दो गुरु भी हैं। रत्नसेन का गुरु है हीरामन तोता और अलाउद्दीन का गुरु राघव चेतन नामक शैतान है। इस तरह पद्मावती को प्राप्त करने में सहायता देने वाले गुरुओं के लक्ष्य में महान अंतर है। दो दोनों गुरु एक साथ नहीं चल सकते।

जायसी की भाषा शैली

अवधी है। उन्होंने ठेठ-ठेठ प्राकृतिक शब्दों का प्रयोग भी किया है। इसी प्रकार गुणों की इतिहास से यदि उनकी पद्मावती को देखा

उन्होंने लौकिक प्रेम कथा का आश्रय लेकर आध्यात्मिक तत्व की अभिव्यंजना की है। वे एक ऐसे रहस्यवादी कवि हैं जिन्होंने हिन्दू और भारतीय परम्पराओं को तरह अंतस्तल भावना पर लगा दिया और बाह्याडम्बरों से दूर रहे। उन्होंने अपनी पदमावत के अंत में आध्यात्मिक रूपक को इस प्रकार प्रकट किया है।

तन चितउर मन राजा कीन्हा
हिय सिंघल बुधि पदमिनी चिन्हा॥
गुरु सुआ जे पंथ दिखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।
नागमति यह दुनिया धंधा।
बाचा सोइ न एही चित बंधा।
राघव दूत सोई सैतानू
माया अलाउदीन सुलतानू

उपर्युक्त चौपाई का आशय यह है कि सिंहल द्वीप की पद्मिनी हृदय में रहने वाली बुद्धि है। परमात्म तत्व जिसकी प्राप्ति के लिए रत्नसेन प्रयत्नशील होता है। नागमति इस दुनिया का गोरख धंधा है। इस गोरख धंधों में पड़ने वाला व्यक्ति उन्हीं में फँस कर रह जाती है। अतः मुक्ति के लिए इन्हें इन गोरख धंधों से निकल कर हृदय में रहने वाली इस बुद्धि को प्राप्त करना होगा। हिरामन तोता गुरु है जो साधक को लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग दिखाता है। सुल्तान अलाउद्दीन माया है। पूरी कथा में दो गुरु भी हैं। रत्नसेन का गुरु है हिरामन तोता और अलाउद्दीन का गुरु राघव चेतन नामक शैतान है। इस तरह पद्मावती को प्राप्त करने में सहायता देने वाले गुरुओं के लक्ष्य में महान अंतर है। ये दोनों गुरु एक साथ नहीं चल सकते।

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है। उन्होंने बीच-बीच सांस्कृतिक शब्दों का प्रयोग भी किया है। इसी प्रकार गुणों की दृष्टि से यदि उनकी पदमावती को देखा

Scanned with CamScanner

युद्ध आदि तो इसमें प्रधान रूप से की प्रमुखता लिए युद्ध वर्णन के प्रसंग में वीरता की अभिव्यक्ति हुई है। श्रृंगार प्रेम प्रसंग वर्णनों में प्रकृति चित्रण भी अभिव्यक्ति हुई है। जायसी ने भाव पक्ष के अलंकारों का प्रयोग किया है। फिर भी प्रधान रूप से उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों का भी स्थान-स्थान पर प्रयोग हुआ है। जिससे भाषा की व्यंजना शक्ति में वृद्धि हुई है। उत्प्रेक्षा के अतिरिक्त अन्य अलंकारों का प्रयोग हुआ है — यमक, रूपकातिशयोक्ति, यमक, रूपक, उपमा, दृष्टांत, विभावना इत्यादि।

इस मूल्यांकन में जायसी की पद्मावत पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए ठीक ही कहा है कि —

" जायसी ने हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों अपनाते हुए हिन्दू प्रेम कथा का आधार लेकर आध्यात्मिक तत्व को अभिव्यक्त किया है तथा जायसी ने एक महाकाव्य लिखा है। और रामचरितमानस को छोड़कर किसी भी महाकाव्य से टक्कर ले सकता है॥

The End